# तीन मछलियां-पंचतंत्र

एक नदी के किनारे उसी नदी से जुडा एक बडा जलाशय था। जलाशय में पानी गहरा होता हैं, इसलिए उसमें काई तथा मछलियों का प्रिय भोजन जलीय सूक्ष्म पौधे उगते हैं। ऐसे स्थान मछलियों को बहुत रास आते हैं। उस जलाशय में भी नदी से बहुत-सी मछलियां आकर रहती थी। अंडे देने के लिए तो सभी मछलियां उस जलाशय में आती थी। वह जलाशय लम्बी घास व झाडियों द्वारा घिरा होने के कारण आसानी से नजर नहीं आता था।

उसी में तीन मछलियों का झुंड रहता था। उनके स्वभाव भिन्न थे। अन्ना संकट आने के लक्षण मिलते ही संकट टालने का उपाय करने में विश्वास रखती थी। प्रत्यु कहती थी कि संकट आने पर ही उससे बचने का यत्न करो। यद्दी का सोचना था कि संकट को टालने या उससे बचने की बात बेकार हैं करने कराने से कुछ नहीं होता जो किस्मत में लिखा है, वह होकर रहेगा।

एक दिन शाम को मछुआरे नदी में मछलियां पकडकर घर जा रहे थे। बहुत कम मछलियां उनके जालों में फंसी थी। अतः उनके चेहरे उदास थे। तभी उन्हें झाड़ियों के ऊपर मछलीखोर पक्षियों का झुंड जाता दिकाई दिया। सबकी चोंच में मछलियां दबी थी। वे चौंके ।

एक ने अनुमान लगाया "दोस्तो! लगता हैं झाडियों के पीछे नदी से जुडा जलाशय हैं, जहां इतनी सारी मछलियां पल रही हैं।"

मछुआरे पुलकित होकर झाडियों में से होकर जलाशय के तट पर आ निकले और ललचाई नजर से मछलियों को देखने लगे।

एक मछुआरा बोला "अहा! इस जलाशय में तो मछलियां भरी पड़ी हैं। आज तक हमें इसका पता ही नहीं लगा।" "यहां हमें ढेर सारी मछलियां मिलेंगी।" दूसरा बोला।

तीसरे ने कहा "आज तो शाम घिरने वाली हैं। कल सुबह ही आकर यहां जाल डालेंगे।"

इस प्रकार मछुआरे दूसरे दिन का कार्यक्रम तय करके चले गए। तीनों मछ्लियों ने मछुआरे की बात सुन ली थी।

अन्ना मछली ने कहा "साथियो! तुमने मछुआरे की बात सुन ली। अब हमारा यहां रहना खतरे से खाली नहीं हैं। खतरे की सूचना हमें मिल गई हैं। समय रहते अपनी जान बचाने का उपाय करना चाहिए। मैं तो अभी ही इस जलाशय को छोडकर नहर के रास्ते नदी में जा रही

हूं। उसके बाद मछुआरे सुबह आएं, जाल फेंके, मेरी बला से। तब तक मैं तो बहुत दूर अटखेलियां कर रही हो-ऊंगी।'

प्रत्यु मछली बोली "तुम्हें जाना हैं तो जाओ, मैं तो नहीं आ रही। अभी खतरा आया कहां हैं, जो इतना घबराने की जरुरत है हो सकता है संकट आए ही न। उन मछुआरों का यहां आने का कार्यक्रम रद्द हो सकता है, हो सकता हैं रात को उनके जाल चूहे कुतर जाएं, हो सकता है। उनकी बस्ती में आग लग जाए। भूचाल आकर उनके गांव को नष्ट कर सकता हैं या रात को मूसलाधार वर्षा आ सकती हैं और बाढ में उनका गांव बह सकता हैं। इसलिए उनका आना निश्चित नहीं हैं। जब वह आएंगे, तब की तब सोचेंगे। हो सकता हैं मैं उनके जाल में ही न फंसूं।"

यद्दी ने अपनी भाग्यवादी बात कही "भागने से कुछ नहीं होने का। मछुआरों को आना हैं तो वह आएंगे। हमें जाल में फंसना हैं तो हम फंसेंगे। किस्मत में मरना ही लिखा हैं तो क्या किया जा सकता हैं?"

इस प्रकार अन्ना तो उसी समय वहां से चली गई। प्रत्यु और यद्दी जलाशय में ही रही। भोर हुई तो मछुआरे अपने जाल को लेकर आए और लगे जलाशय में जाल फेंकने और मछलियां पकड़ने । प्रत्यु ने संकट को आए देखा तो लगी जान बचाने के उपाय सोचने । उसका दिमाग तेजी से काम करने लगा। आस-पास छिपने के लिए कोई खोखली जगह भी नहीं थी। तभी उसे याद आया कि उस जलाशय में काफी दिनों से एक मरे हुए ऊदबिलाव की लाश तैरती रही हैं। वह उसके बचाव के काम आ सकती हैं।

जल्दी ही उसे वह लाश मिल गई। लाश सडने लगी थी। प्रत्यु लाश के पेट में घुस गई और सडती लाश की सडांध अपने ऊपर लपेटकर बाहर निकली। कुछ ही देर में मछुआरे के जाल में प्रत्यु फंस गई। मछुआरे ने अपना जाल खींचा और मछलियों को किनारे पर जाल से उलट दिया। बाकी मछलियां तो तडपने लगीं, परन्तु प्रत्यु दम साधकर मरी हुई मछली की तरह पडी रही। मछुआरे को सडांध का भभका लगा तो मछलियों को देखने लगा। उसने निश्चल पडी प्रत्यु को उठाया और सूंघा "आक! यह तो कई दिनों की मरी मछली हैं। सड चुकी हैं।" ऐसे बडबडाकर बुरा-सा मुंह बनाकर उस मछुआरे ने प्रत्यु को जलाशय में फेंक दिया।

प्रत्यु अपनी बुद्धि का प्रयोग कर संकट से बच निकलने में सफल हो गई थी। पानी में गिरते ही उसने गोता लगाया और सुरक्षित गहराई में पहुंचकर जान की खैर मनाई।

यद्दी भी दूसरे मछुआरे के जाल में फंस गई थी और एक टोकरे में डाल दी गई थी। भाग्य के भरोसे बैठी रहने वाली यद्दी ने उसी टोकरी में अन्य मछलियों की तरह तडप-तडपकर प्राण त्याग दिए।

सीख : भाग्य भी उन्ही का साथ देता है जो कर्म में विश्वास रखते हैं और कर्म को प्रधान मानते हैं। भाग्य के भरोसे हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहने वाले का विनाश निश्चित है।

अनुवाद - कुलदीप धर

# तीन मछलियां-पंचतंत्र

एक नदी के किनारे उसी नदी से जुड़ा एक बड़ा जलाशय था। जलाशय में पानी गहरा होता है, इसलिए उसमें काई तथा मछलियों का प्रिय भोजन जलीय सूक्ष्म पौधे उगते हैं। ऐसे स्थान मछलियों को बहुत रास आते हैं। उस जलाशय में भी नदी से बहुत-सी मछलियां आकर रहती थी। अंडे देने के लिए तो सभी मछलियां उस जलाशय में आती थी। वह जलाशय लम्बी घास व झाड़ियों द्वारा घिरा होने के कारण आसानी से नजर नहीं आता था।

उसी में तीन मछलियों का झुंड रहता था। उनके स्वभाव भिन्न थे। अन्ना संकट आने के लक्षण मिलते ही संकट टालने का उपाय करने में विश्वास रखती थी। प्रत्यु कहती थी कि संकट आने पर ही उससे बचने का यत्न करो। यद्दी का सोचना था कि संकट को टालने या उससे बचने की बात बेकार है करने कराने से कुछ नहीं होता जो किस्मत में लिखा है, वह होकर रहेगा।

एक दिन शाम को मछुआरे नदी में मछलियां पकड़कर घर जा रहे थे। बहुत कम मछलियां उनके जालों में फंसी थी। अतः उनके चेहरे उदास थे। तभी उन्हें झाड़ियों के ऊपर मछलीखोर पक्षियों का झुंड जाता दिखाई दिया। सबकी चोंच में मछलियां दबी थी। वे चौंके।

एक ने अनुमान लगाया "दोस्तो! लगता है झाड़ियों के पीछे नदी से जुड़ा जलाशय है, जहां इतनी सारी मछलियां पल रही हैं।" मछुआरे पुलकित होकर झाड़ियों में से होकर जलाशय के तट पर आ निकले और ललचाई नजर से मछलियों को देखने लगे।

एक मछुआरा बोला "अहा! इस जलाशय में तो मछलियां भरी

पहीं है। मुए उक हमें उमका पता भी नहीं लगा।" "यहां हमें
ढिर मारी मछलियां मिलेंगी।" ट्रमरा गेला।
उीमरे ने कहा "मुए उे माम भिरने वाली है। कल मुबह ही मुकर
यहां एल हालेंगे।"
उम प्रकार मछमुरे ट्रमरे भिन का काटट्रम उय करके चले
गाए। उीनें मछ्लियें ने मछमुरे की गाउ मुन ली थी।

मजा मछली ने कहा "माथियें! उुमने मछमुरें की गाउ मुन ली। मग
हमारा यहां रुहना पिउरे मे पिाली नहीं है। पिउरे की मुचना
हमें मिल गाई है। मुमय रहउे मपनी एन गचाने का उपाय
करना चाहिाए। मैं उे मभी ही उम एलामय कें छोहकर नहर के
रामुे नदी मे ए रही हूं। उमके गाद मछमुरे मुबह मुाए, एल
ढेंके, मेरी गला मे। उग उक मैं उे गहउ दूर मएपिलियां कर रही
हें-उंगी।'

पूउ मछली गेली "उुम्हें एना है उे एाउ, मैं उे नहीं मु रही। मभी
पिउरा मुया कहां है, एी उउना ध्गराने की एहरउ है ही मकउा
है मंकए मुाए ही न। उन मछमुरें का यहां मुने का काटट्रम रद्
हें मकउा है, हें मकउा है राउ कें उनके एल चूहे कुउर एाएं, हें
मकउा है। उनकी गमुी मे मुग लग एाए। कुचाल मुकर उनके
गांव कें नष्ट कर मकउा है या राउ कें ममुलाणार वष्ठा मु मकउी
है छिर गाढ़ मे उनका गांव गह मकउा है। उमलिाए उनका मुना
निश्चिउ नहीं है। एग वह मुाएंगे, उग की उग मेचेंगे। हें मकउा है मैं
उनके एल मे ही न ढंमुं।"

यमूाी ने मपनी हागूवाची गाउ कही "हागने मे कुछ नहीं हेने का।
मछमुरें के मुना है उे वह मुाएंगे। हमें एल मे ढंमना है उे हम
ढंमेंगे। किममुउ मे मरना ही लिाखा है उे कृा किया ए मकउा है?"
उम प्रकार मजा उे उमी मुमय वहां मे चली गाई। पूउ छिर यमूाी
एलामय मे ही रही। मेर हुाई उे मछमुरे मपने एल के लेकर मुाए
छिर लगे एलामय मे एल ढेंकने छिर मछलियां पकहने। पूउ ने

मंकट के मुाग ढिापा ते लगी एन गमाने के उपाय मोमने। उमका ढिमाग तेजी मे काम कराने लगा। मुम-पाम छिपने के लिए कोई पिपली एगह ही नहीं थी। उभी उमे याढ मुया कि उम एलामय मे कापी ढिनो मे एक भारी हाए ऊढबिलाव की लाम तैरती रही है। वह उमके गमाव के काम मु मकती है।

एल्दी ही उमे वह लाम मिल गई। लाम मडने लगी थी। पतु लाम के पेट मे घुम गई छार मडती लाम की मुगंध मपने ऊपर लपेटकर गाहर निकली। कुछ ही ढेर मे मछुमारे के एल मे पतु ढंम गई। मछुमारे ने मपना एल पींचा छार मछलियो के किनारे पर एल मे उलट ढिया। गाकी मछलियां ते तडपने लगीं, परतु पतु ढम माधकर मरी हुई मछली की तरह पडी रही। मछुमारे को मडांध का रुडका लगा ते मछलियो को ढीपने लगा। उमने निम्नुल पडी पतु को उठाया छार मूंघा "मुक! यह ते कई ढिनो की मरी मछली है। मड गुकी है।" ऐमे गडगडाकर मुरा-मा मुह गनाकर उम मछुमारे ने पतु को एलामय मे ढेक ढिया।

पतु मपनी गुद्धि का प्रयोग कर मंकट मे गम निकलने मे मफल हो गई थी। पानी मे गिरते ही उमने गोता लगाया छार मुरक्षित गहराई मे पहुंमकर एन की पैर मनाई।
यमुी ही ढुमरे मछुमारे के एल मे ढंम गई थी छार एक टोकरे मे डाल ढी गई थी। डागृ के डोमे गैठी रहने वाली यमुी ने उमी टोकरी मे मनु मछलियो की तरह तडप-तडपकर पाण छोड ढिए।

मीप : डागृ ही उमी का माथ ढेता है ऐ कष्ट मे विश्वाम रापते है छार कष्ट के पणन भानते है। डागृ के डोमे हाथ पर हाथ रापकर गैठ रहने वाले का विनाम निश्चित है।

मनुवाढ - कुलढीप णर